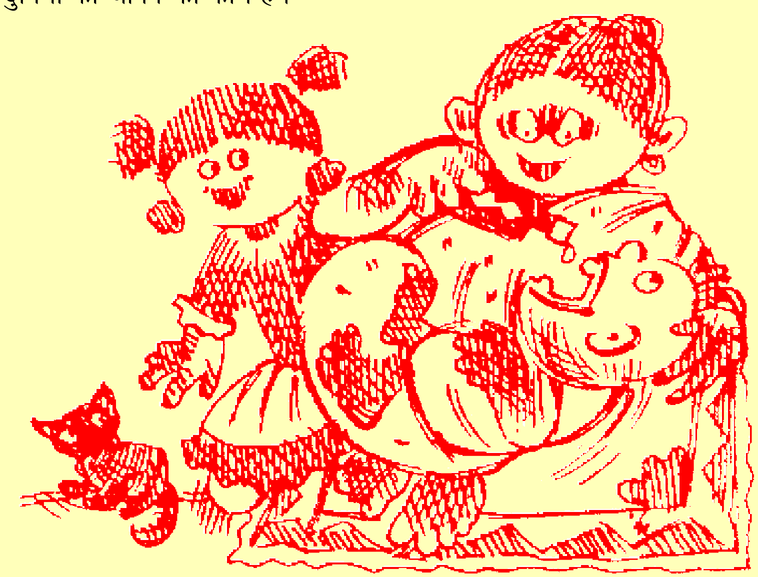
जनवाचन आंदोलन

जन वाचन आंदोलन का मकसद है। किताबों को गाँव-गाँव ले जाना, इन किताबों को नवपाठकों के बीच पढ़कर सुनाना और पढ़वाकर सुनना। गाँव की जनता के पास आज भी पढ़ने-लिखने के लिए स्तरीय किताबें नहीं हैं और जो हैं भी वे बेहद महँगी हैं। भारत ज्ञान विज्ञान समिति ग्रामीण जन तक कम कीमत और सरल भाषा में देशभर के मशहूर लेखकों की किताबें पहुँचाना चाहती है, ताकि गाँव-गाँव में जन वाचन, पढ़ाई और पुस्तकालय संस्कृति पैदा हो सके। संपूर्ण साक्षरता अभियान से जो नवपाठक निकलकर सामने आए हैं, वे अपने साक्षरता के अर्जित कौशल को बनाए रख सकें, उनके सामाजिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक चेतना का स्तर बढ़े और वे जागरूक होकर अपने बुनियादी हकों की लड़ाई के लिए लामबंद हो सकें, यह इस अभियान का प्राथमिक उद्देश्य है। भारतीय लोकतंत्र की रक्षा के लिए गाँव के लोग आगे आएँ, इसके लिए भी इस तरह की चेतना का विकास जरूरी है। साक्षरता केवल अक्षर सीखने का काम नहीं है, यह पूरी दुनिया को जानने का काम है।

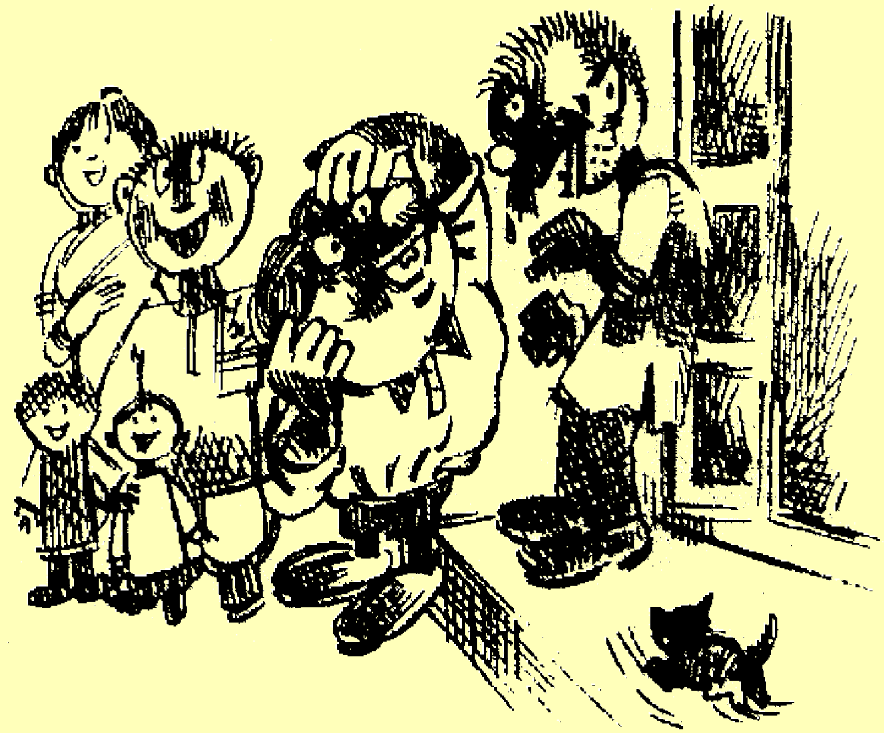


भारत ज्ञान विज्ञान समिति

मूल्य : 10 रुपये

कहकहे

बर्द्धमान जिला साक्षरता समिति



भारत ज्ञान विज्ञान समिति

कहकहे : *KAHKAHE*
बर्द्धमान जिला साक्षरता समिति की किताब से साभार

नवपाठकों के लिए भारत ज्ञान विज्ञान समिति द्वारा प्रकाशित

पुस्तकमाला संपादक: असद ज़ैदी और विष्णु नागर
कार्यकारी संपादक: संजय कुमार
Series Editor : Asad Zaidi and Vishnu Nagar
Executive Editor : Sanjay Kumar

रेखांकन: समर मुखर्जी
लेजर ग्राफिक्स: अभय कुमार झा

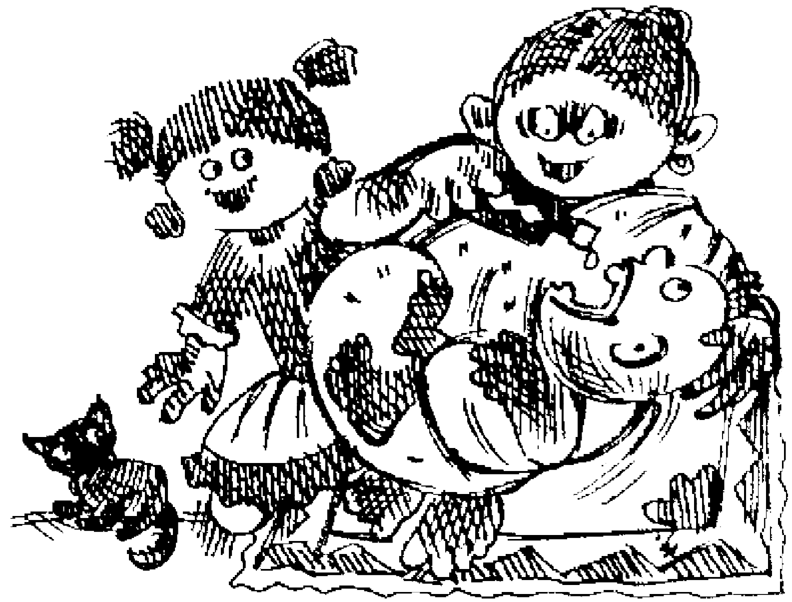
प्रकाशन वर्ष: 2003

इस किताब का प्रकाशन भारत ज्ञान विज्ञान समिति द्वारा देशभर में चलाए जा रहे जन वाचन आंदोलन के तहत किया गया है ताकि लोगों में पढ़ने-लिखने की आदत पैदा हो सके। इस अभियान का मुख्य उद्देश्य गांव के पाठकों को सस्ती और सरल भाषा में देश के मशहूर रचनाकर्मियों द्वारा लिखी गई उत्कृष्ट पुस्तकें उपलब्ध करवाना है। खासकर उन नवपाठकों के लिए जो देशभर में चलाए गए संपूर्ण साक्षरता अभियान से निकलकर सामने आए हैं।

मूल्य: 10 रुपये

*Published by **Bharat Gyan Vigyan Samithi**, **Basement of Y.W.A. Hostel No. II, G-Block, Saket , New Delhi - 110017, Phone : 011 - 6569943, Fax : 91 - 011 - 6569773,*** **email: bgvs@vsnl.net**

कहकहे



साभार: बर्द्धमान जिला साक्षरता समिति



कहकहे

एक

हमारे मुहल्ले के श्यामबाबू बड़े ही कंजूस हैं। एकबार उनका रूमाल खो गया। वह सिर पर हाथ रख कर बैठ गये। खाना-पीना हराम हो गया। उनकी पत्नी ने कहा-एक रूमाल ही तो खोया है। इतना उदास क्यों हो। नया रूमाल खरीद लेना। पर श्यामबाबू एक नम्बर के कंजूस। उन्होंने सोचा कि नये रूमाल के लिए पैसा जमा करना चाहिए।

अचानक उनके दिमाग में एक बात आई। उन्होंने सोचा कि एक बार दाढ़ी बनवाने में एक रुपया खर्च होता है। अगर वह एक महीना दाढ़ी न बनवायें तो रूमाल का पैसा जमा हो सकता है। यह सोच कर वह खुश हो गए। उन्होंने दाढ़ी बनवाना छोड़ दिया।

कुछ दिनों उनकी दाढ़ी काफी बढ़ गई। एक दिन श्यामबाबू बाजार जा रहे थे। रास्ते में उन्होंने एक साधु देखा। उसकी खूब लम्बी दाढ़ी थी।

श्यामबाबू ने साधु से पूछा-क्या आपकी चादर खो गई है ?

साधु ने पूछा-क्यों ?

श्यामबाबू ने जवाब दिया-मेरा तो एक रूमाल ही खोया है। इसी चक्कर में मेरी दाढ़ी इतनी बड़ी हो गई है। आपकी दाढ़ी तो मेरी दाढ़ी से भी ज़्यादा लम्बी है। ज़रूर आपकी चादर खो गई होगी।

❑❑❑



दो

चमेली की माँ उसके छोटे भाई मनु को दवा खिला रही थी।

अनु ने माँ से पूछा–माँ तुम मनु को यह किस चीज़ की दवा खिला रही हो।

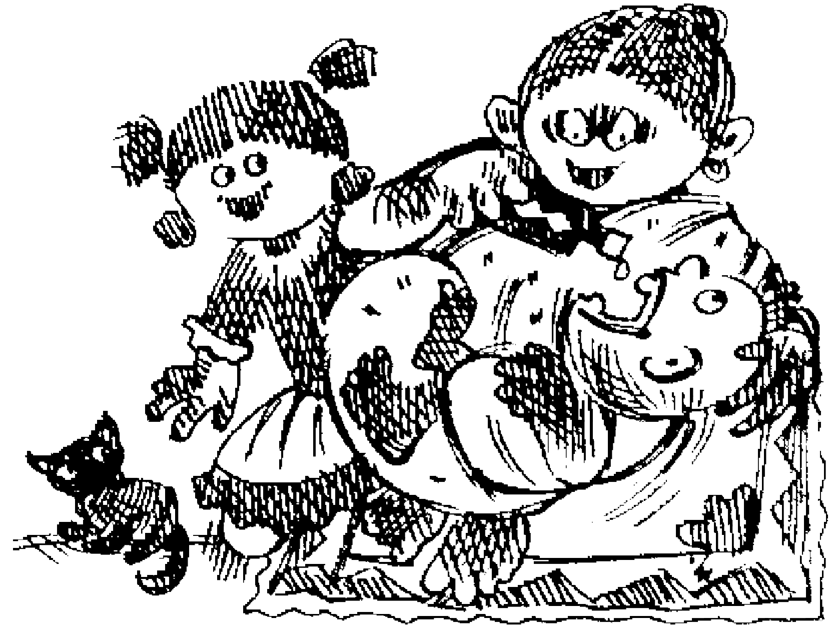
माँ ने कहा–देखती नहीं, मनु को दाँत नहीं है। ये दवा खिलाने से उसे दाँत निकल आएँगे।

यह सुन कर अनु ने कहा–माँ तो फिर थोड़ी–सी दवा मुझे भी दो। मैं दादी माँ को खिलाऊँगी।

माँ ने पूछा–क्यों, दादी माँ को क्यों खिलाओगी?

अनु ने कहा–देखती नहीं! दादी माँ के भी दाँत नहीं हैं।





तीन

एक अंग्रेज की हिन्दुस्तानी बीबी थी। अंग्रेज हिन्दी नहीं जानता था। इससे उसकी बीबी को फायदा था। पति को जब भी गाली देनी होती, वह हिन्दी में गाली देती। पति तो हिन्दी जानता नहीं था। इसलिए समझ नहीं पाता था।

एक दिन बीबी ने अंग्रेज को गधा कहा–अंग्रेज ने पूछा–तुमने मुझे 'गधा' क्यों कहा? यह तो गाली है।

बीबी ने कहा– नहीं, नहीं, गधा गाली नहीं है। गधा का मतलब तो है मोटा–ताजा।

अंग्रेज न बीबी के बातों पर विश्वास कर लिया।

इसी तरह एक दिन बीबी ने अंग्रेज को उल्लू कहा– अंग्रेज ने



फिर पूछा–ये उल्लू क्या होता है ? बीबी ने कहा–अरे भई उल्लू का मतलब होता है–दुबला–पतला। अंग्रेज यह सुन कर चुप हो गया।

एक बार अंग्रेज के ससुर बीमार पड़े। बीबी ने कहा: चलो, जरा पिताजी को देख आएँ। वे बीमार हैं।

यह सुनकर अपनी बीबी के साथ ससुराल गया। वहाँ पहुँच कर देखा कि उसके ससुर काफी बीमार हैं। वे कमज़ोर और दुबले हो गए हैं। अंग्रेज ने बीबी को कहा: देख रही हो। तुम्हारे पिताजी पहले गधे थे। अब उल्लू हो गये हैं।

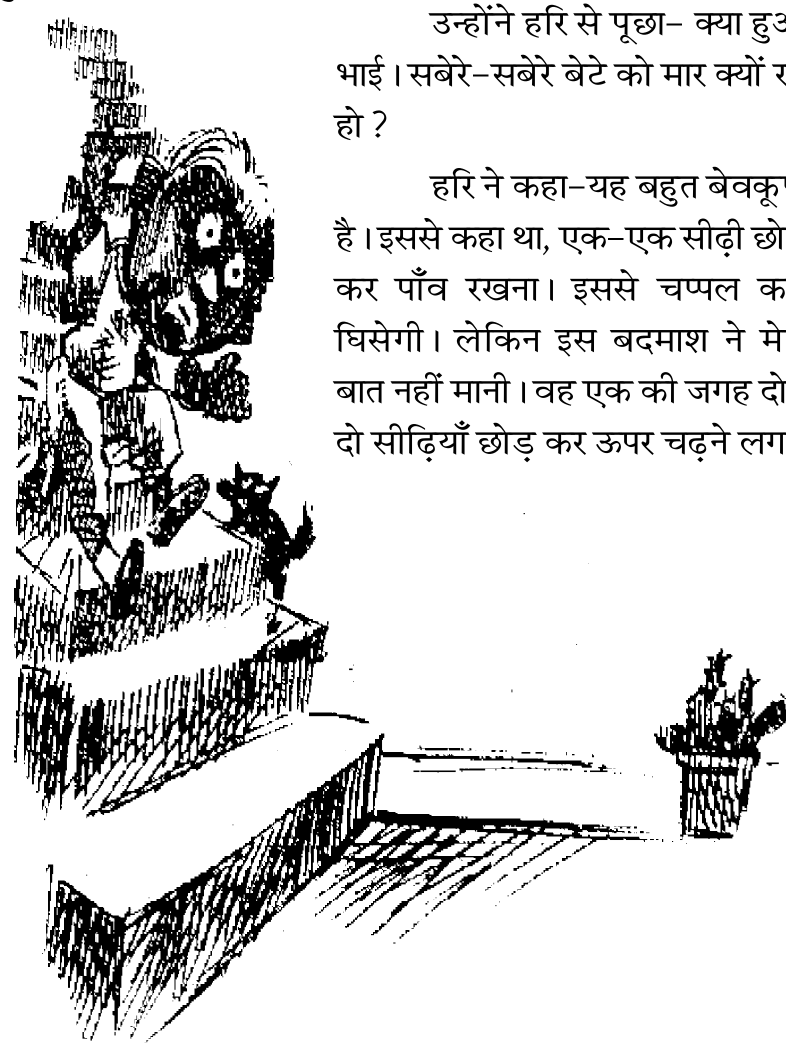
बीबी की सूरत देखने लायक थी।

❒❒❒



चार

हरिनारायण बहुत कंजूस आदमी थे। एक दिन सबेरे–सबेरे वह अपने बेटे को बहुत थप्पड़ मार रहे थे। अचानक उधर से भोला गुजरे।



उन्होंने हरि से पूछा– क्या हुआ भाई। सबेरे–सबेरे बेटे को मार क्यों रहे हो ?

हरि ने कहा–यह बहुत बेवकूफ है। इससे कहा था, एक–एक सीढ़ी छोड़ कर पाँव रखना। इससे चप्पल कम घिसेगी। लेकिन इस बदमाश ने मेरी बात नहीं मानी। वह एक की जगह दो–दो सीढ़ियाँ छोड़ कर ऊपर चढ़ने लगा।

यह सुनकर भोला हँस कर बोले– यह तो और भी अच्छी बात है। आपका लड़का तो आप से भी ज़्यादा चालाक है। आपने तो एक ही सीढ़ी छोड़ने को कहा था। पर वह तो एक की जगह दो–दो सीढ़ियाँ छोड़ रहा था। इससे तो चप्पल और भी कम घिसेगी।

हरि बोले–इसी बात का तो दु:ख है। चप्पल तो कम घिसी, पर दो सीढ़ी छोड़ने के चक्कर में उसकी पैन्ट जो फट गई। उसे सिलवाने के पैसे भी तो लगेंगे।

❒❒❒





पाँच

रामू से रोज़ बत्तख के अंडे टूट जाते थे। इस कारण उसे मालिक की मार खानी पड़ती थी।

एक दिन रामू को नई बात सूझी। वह दौड़ता हुआ मालिक के पास गया और बोला–मालिक कल से, मुझ से बत्तख के अंडे नहीं टूटेंगे। कल सबेरे आकर आप खुद देख लेना।

दूसरे दिन मालिक खुशी–खुशी पहुँचा। देखा कि रामू सिर पर हाथ रख कर बैठा हुआ है। मालिक चिल्ला कर पूछा–क्यों रे रामू। ये क्या हुआ ?

रामू ने सिर झुका कर कहा: क्या कहूँ मालिक! सब गड़बड़ हो गया। सारी रात मेहनत करके ढेर–सा पानी गर्म किया था। सबेरे–सबेरे उस उबले पानी से चौबच्चा को भर दिया। सोचा कि गरम पानी की वजह से बत्तखें उबले हुए अंडे देगी। वह न टूटेंगे और न खराब होंगे।

सुन कर मालिक ने अपना सिर पीट लिया।

❒❒❒

छह

धीरज बहुत शराब पीता था। इसी बात को लेकर पत्नी से उसका अक्सर झगड़ा होता था। एक दिन उसकी पत्नी अखबार पढ़ रही थी। अखबार पढ़ते-पढ़ते उसने धीरज से कहा-जानते हो अखबार में क्या लिखा है ? इसमें लिखा है, शराब पीना बुरी बात है। शराब पीकर देश में बहुत से लोग मर रहे हैं।

यह सुन कर धीरज बोला: क्या अखबार में ऐसा लिखा है। तब तो मुझे सोचना पड़ेगा। तब तो इसे लेना छोड़ देना ही ठीक है।

धीरज की पत्नी खुश हो कर बोली-अरे वाह! तुम शराब पीना छोड़ दोगे ?

धीरज ने मुस्करा कर कहा-शराब ? शराब नहीं। यह अखबार लेना छोड़ दूँगा।

धीरज की पत्नी, धीरज की मुँह ताकने लगी।

❐❐❐





सात

विमल मक्खीचूस आदमी थे। एक बार घी का दाम सौ रुपये से घट कर अस्सी रुपये हो गया। जिसने सुना खुश हुआ। मगर विमल बहुत उदास हो गए।

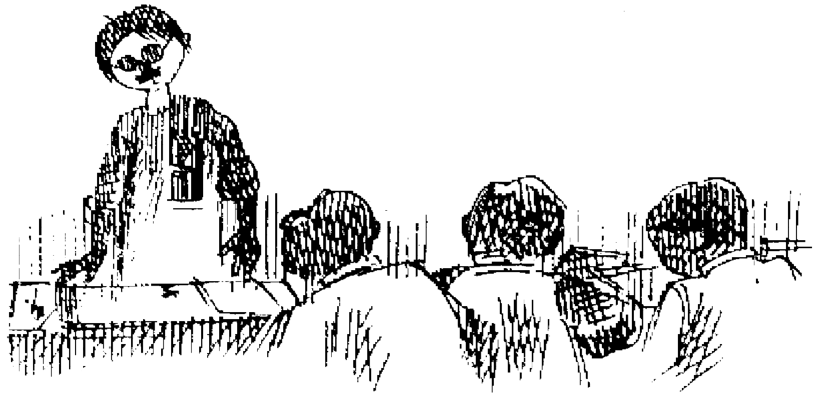
उनकी मुलाकात अमल से हुई। अमल ने पूछा-क्या हुआ विमल, इतने उदास क्यों हो ?

विमल ने जवाब दिया-सुना नहीं, घी का दाम घट गया है।

अमल ने कहा-यह तो अच्छा हुआ। आपको तो खुश होना चाहिए।

विमल ने दु:ख भरी आवाज में कहा-अरे भाई आप तो जानते हैं कि मैं घी नहीं खाता था। इससे हर महीने मेरे एक सौ रुपये बचते थे। अब सिर्फ अस्सी रुपये बचेंगे। मुझे हर महीने 20 रुपये का घाटा होगा।

❐❐❐



आठ

शिक्षक ने छात्र से पूछा–अच्छा ! रघु, चाँद ज़्यादा फायदेमंद है या सूरज ?

रघु–चाँद, मास्साब।

शिक्षक–कैसे ?

रघु–चाँद हमें रात के अँधेरे में रोशनी देता है। चाँद न हो तो चारों ओर अँधेरा रहेगा। पर सूरज तो दिन में रोशनी देता है। उस समय तो उजाला रहता है। इसीलिए दिन के समय सूरज न भी निकले तो, चलेगा।





❑❑❑

नौ

सहदेव किरायेदार के चिल्लयों मचाते बच्चों से तंग आ चुका था। उसने किरायेदार को निकाल दिया। साथ ही उसने ऐलान किया कि वह अब बाल–बच्चे वालों को मकान किराये पर नहीं देगा।

एक दिन एक आठ साल का लड़का सहदेव के घर आया। उसने सहदेव से पूछा–सुना है, आपका मकान खाली है। सहदेव ने कहा–हाँ। लेकिन मैं यह मकान उसे ही किराये पर दूँगा, जिसके बाल–बच्चे न हों।

लड़के ने कहा–तब तो आप यह मकान मुझे किराये पर दे सकते हैं। मेरा कोई बाल–बच्चा नहीं है। सिर्फ माँ–बाप और पाँच भाई बहन हैं।

यह सुन कर सहदेव का मुँह खुला का खुला रह गया।

❑❑❑





दस

रमेश बाबू अपने इलाके के सबसे ज़्यादा धनी आदमी थे। लेकिन अपने इलाके के सबसे बड़े कंजूस भी थे। उनका हाल यह था कि चमड़ी जाय पर दमड़ी न जाय। लाखों रुपये होने के बावजूद भी वे किसी को कुछ नहीं देते थे।

एक दिन उनके पास एक भिखारी आया। उसने गिड़-गिड़ाकर कहा–बाबूजी, एक कमीज दे दो। बहुत जाड़ा लग रहा है।

रमेश बाबू ने कहा–कमीज कहाँ से लाऊँ। मेरे पास खुद ही कमीज नहीं। पिछले छः महीने से खाली बदन हूँ।

भिखारी बोला–तब कुछ रुपये दे दो।

रमेश बाबू बोले–रुपये! रुपये कहाँ से लाऊँ। मेरे घर में एक पैसा भी नहीं है।

भिखारी बड़ी आस लेकर बोला–तो हुजूर कुछ खाने को ही दे दें। मैं बहुत भूखा हूँ।

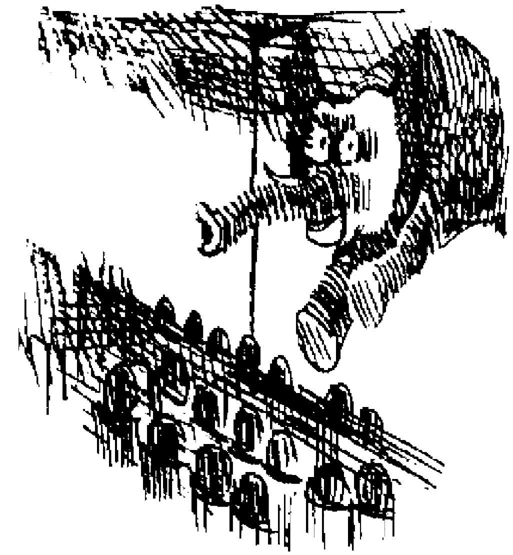
रमेश बाबू बिगड़ कर बोले–अरे, तुम मुझ से खाना माँग रहे हो? मैं तो खुद ही दो दिनों से बाल-बच्चों के साथ भूखा हूँ।

भिखारी ने गुस्से से कहा–अगर ऐसा है तो आप घर में बैठे-बैठे क्या कर रहे हैं। मेरे साथ कटोरा लेकर निकल पड़िए, भीख माँगने।

❒❒❒







ग्यारह

एक सिनेमा हाल में 'जंगली हाथी' नाम की फ़िल्म चल रही थी।

फ़िल्म में हाथी पागल हो जाता है। पागल हो कर वह हर तरफ तोड़-फोड़ मचाना शुरू कर देता है।

यह देख कर सामने की सीट पर बैठे हुए जुम्मन मियाँ सीट छोड़ कर भागे। गेट पर खड़े दरबान ने उनसे पूछा–अरे, मियाँ पागलों की तरह क्यों भाग रहे हैं। सिनेमा तो अभी शुरू ही हुआ है।

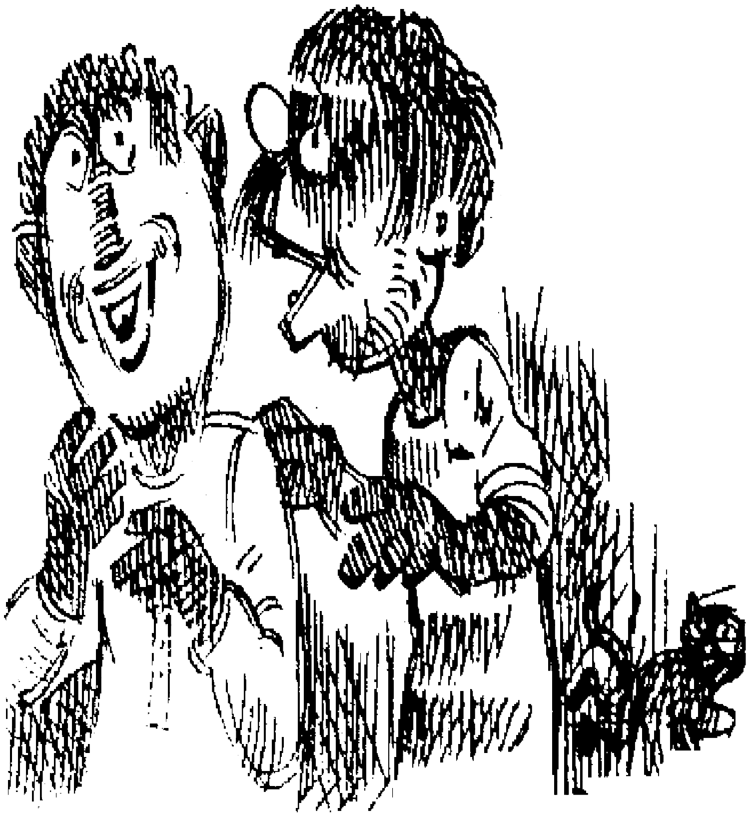
जुम्मन मियाँ ने कहा– अरे देखते नहीं, हाथी पागल हो गया है। उसने अगर एक पाँव भी बढ़ा दिया तो मेरी चटनी बन जाएगी।

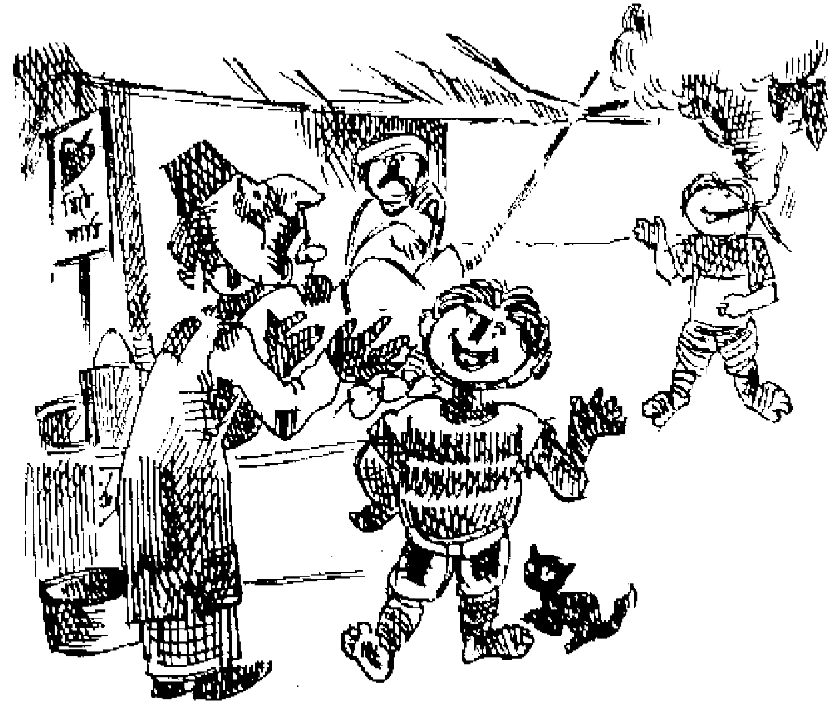
दरबान ने जुम्मन मियाँ से मुस्कराते हुए कहा–अरे जनाब,

यह सिनेमा का हाथी है। यह भला पर्दे से बाहर कैसे आयेगा।

जुम्मन मियाँ ने डर से काँपते हुए कहा–भाई मेरे, यह तो हम और आप जानते हैं कि यह सिनेमा का हाथी है। मगर हाथी को तो यह बात नहीं मालूम!

❒❒❒





बारह

दस साल का एक लड़का दुकान में सिगरेट खरीद रहा था। पास ही करीम चाचा खड़े थे। बच्चे को सिगरेट खरीदते देख कर उन्होंने पूछा–क्यों रे इसी उम्र में सिगरेट पीना शुरू कर दिया?

लड़के ने घूम कर कहा: मैं भला क्यों सिगरेट पिऊँगा। मुझे क्या दु:ख है। मैं तो दारू पीता हूँ। यह सिगरेट तो मेरे छोटे भाई के लिए है।

❒❒❒❒